Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. VI, Issue No. XI, July-2013, ISSN 2230-7540

REVIEW ARTICLE

जयपुर शहर के पर्यटन स्थल एक भौगोलिक अध्ययन

AN INTERNATIONALLY INDEXED PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. VI, Issue No. XI, July-2013, ISSN 2230-7540

जयपुर शहर के पर्यटन स्थल एक भौगोलिक अध्ययन

Dr. Ramprakash Gurjar*

Head, Department of Geography, L.B.S. Govt. College Kotputli, Jaipur, Rajasthan

शोध पत्र संक्षेप – *राजस्थान की राजधानी जयपुर, जयपुर की आज दुनिया भर में एक अलग पहचान है। जयपुर अपने इतिहास में दुनिया के हर कोने में प्रसिद्ध है। लोग अब जयपुर में पिंक पिंक "पिंक सिटी" के नाम से लोकप्रिय हैं क्योंकि यहां संरचनाओं को बनाने के लिए गुलाबी रंग के पत्थरों का इस्तेमाल किया गया है। वार्षिक रूप से करोड़ों विदेशी पर्यटक जयपुर घूमने आते हैं और जयपुर की खूबसूरती को अपने कमरों में कैद करने और उसे फिर से दिल में देखने की महत्वाकांक्षा रखते हैं। शहर की अतीत और प्राचीन संस्कृति 18 वीं शताब्दी की याद दिलाती है और इसका श्रेय महान योद्धा और खगोलशास्त्री महाराजा सवाई जय सिंह को जाता है। जयपुर शहर की गुलाबी इमारतें और इमारतें आपके दिल में एक रोमांटिक आकर्षण लाती हैं। यदि आपके पास जयपुर की राजसी शान का अनुभव नहीं है, तो अब अपनी यात्रा की योजना बनाएं। जयपुर और इस शहर के आसपास बहुत सारे शानदार और खूबसूरत पर्यटक स्थल है जिन्हें देखने के लिए यहाँ आने वाले पर्यटक को कम से कम एक सप्ताह का समय चाहिए।*

मुख्य बिन्दु: - *गुलाबी नगरी, हवामहल, जंतर मंतर, सिटी पैलेस, नाहरगढ़, जयगढ, मिर्जा इस्माइल रोड़, पिंक पर्ल, राजमंदिर, जवाहर कला केंद्र, डिग्गी पैलेस एवं निष्कर्ष।*

----------X----------

प्रस्तावना

राजस्थान की राजधानी जयपुर पिंक सिटी, देशी और विदेशी पर्यटकों की पहली पसंद है। जयपुर शहर अरावली पहाड़ों की गोद में बसा है। शानदार महलों और इमारतों के साथ इस शहर का निर्माण करते समय, यातायात के लिए 7 प्रवेश द्वार बनाए गए थे। एक ऐसा शहर जिसमे उच्च तबक़े से लेकर निम्न तबक़े वाले प्रत्येक व्यक्ति के लिये सुविधाएं उपलब्ध हो। अपनी सांस्कृतिक विरासत और प्राचीन हिन्दू वास्तुशिल्प के लिए प्रसिद्घ यह शहर वर्तमान में भी पूरी तरह से विकसित और व्यस्थित ढंग से बना हुआ है। आज भी पर्यटक इस शहर की चारदीवारी के अंदर बने हुए पुराने जयपुर को देखने के लिए आते है लेकिन समय के साथ-साथ कुछ नई इमारतें इतनी खूबसूरत बनी हुई है। जयपुर का गौरवशाली अतीत आज भी शहर के महलों और किलों में एक शाही परिवार में जीवित है। यहां की प्रमुख इमारतों में 18 वीं शताब्दी में निर्मित सिटी पैलेस, जंतर मंतर, हवा महल, रामबाग पैलेस और नाहरगढ़ किला शामिल हैं। अन्य सार्वजनिक भवनों में एक संग्रहालय और एक पुस्तकालय शामिल हैं। राजसी किलों और हवेलियों, विशाल सुंदर उद्यान, सुंदर मंदिर, शांत परिदृश्य और समृद्ध और सांस्कृतिक विरासत जयपुर को दुनिया भर के पर्यटकों के लिए एक आदर्श गंतव्य बनाते हैं। इस शहर में कदम रखते ही जयपुर का नजारा बेहद मंत्रमुग्ध कर देता है।

भौगोलिक स्थिति

जयपुर जिला राजस्थान के पूर्वी भाग में 26°23' से 27°51' उत्तरी अक्षांश और 74°55' से 76°50' पूर्वी देशांतर में स्थित है! इसके उत्तर में राजस्थान का सीकर जिला और हरियाणा का महेंद्रगढ़ जिला, दक्षिण में टोंक जिला, पूर्व में अलवर, दौसा और सवाई माधोपुर जिले और पश्चिम में नागौर और अजमेर जिले हैं!

जयपुर शहर एक अर्ध-शुष्क जलवायु का अनुभव करता है। उत्तर भारत के अन्य शहरों की तुलना में पूरे वर्ष तापमान अपेक्षाकृत अधिक रहता है। ग्रीष्म ऋतु अप्रैल में शुरू होती है और जुलाई में समाप्त होती है।

यहां औसत तापमान 30 डिग्री सेल्सियस और 45 डिग्री सेल्सियस से ऊपर पहुंच सकता है, मानसून अगस्त के महीने में शुरू होता है, जो सितंबर में समाप्त होता है। यहाँ का औसत तापमान 8° से 21°C तक है। मौसम बहुत सुहावना होता है। रेगिस्तान की निकटता के कारण, रातें ठंडी होती हैं और दिन गर्म होते हैं।

www.ignited.in

अनुसंधान उद्देश्य

1. जयपुर में पर्यटक स्थलों का अध्ययन किया गया है।
2. राज्य और केंद्र सरकार द्वारा संरक्षित पर्यटक स्थलों का उल्लेख जयपुर में किया गया है।
3. राजस्थान में पर्यटन विकास का अध्ययन किया गया है।

शोध परिकल्पना

1. जयपुर एक महत्वपूर्ण पर्यटन केंद्र के रूप में विकसित हुआ है।
2. राज्य सरकार की नई पर्यटन नीति विकास के नए आयाम प्रदान करेगी।

डेटा संग्रह और कार्यप्रणाली

अध्ययन के क्षेत्र के सूक्ष्म अध्ययन के लिए प्राथमिक डेटा एकत्र किया गया है जो प्रमुख पर्यटन स्थानों से लिया गया है। यह पूरा कार्य प्रश्नावली की तुलना में अधिक अनुभवजन्य है। ये क्षेत्रीय डेटा से प्राथमिक डेटा की तुलना सरकारी डेटा से करने में उपयोगी होंगे। जयपुर में पर्यटन विकास से संबंधित आँकड़ों से लिया गया है, जिसे हमने प्रकाशित और अप्रकाशित स्रोतों से प्राप्त किया है। यह अध्ययन प्राथमिक और माध्यमिक डेटा पर आधारित है।

जयपुर के प्रमुख पर्यटन स्थल

राजस्थान के सबसे ज्यादा खूबसूरत शहर जयपुर में पूरे साल लाखों की संख्या में पर्यटक घूमने आते है। कभी आमेर की रियासत रहा जयपुर शहर आज राजस्थान का सबसे आधुनिक और विकसित शहर है। एक समय ऐसा था जब जयपुर शहर आमेर के राजाओं की रियासत का एक हिस्सा हुआ करता था।

लेकिन आज वही आमेर जयपुर शहर का सबसे ज्यादा देखा जाने वाला पर्यटक स्थल है। सवाई महाराजा जयसिंह द्वितीय ने जब जयपुर के निर्माण की परियोजना शुरू की थी, उस समय उनके मन में इस शहर के निर्माण को लेकर सिर्फ एक ही लक्ष्य था की दुनिया का सबसे व्यस्थित और विकसित शहर का निर्माण करना।

पुराने शहर की चारदीवारी के बाहर बसे हुए जयपुर में चौड़ी सड़के, शॉपिंग मॉल, मल्टीप्लेक्स, बहुमंजिला इमारतें और खूबसूरत बड़े-बड़े उद्यान बने हुए है। जयपुर घूमने आने वाले हर पर्यटक को इस शहर और इसके आसपास के क्षेत्रों में प्राचीन इमारतें, खूबसूरत प्राकर्तिक स्थलों के साथ-साथ कुछ आधुनिक इमारतें देखने के लिये मिलती है।

जयपुर और इस शहर के आसपास बहुत सारे शानदार और खूबसूरत पर्यटक स्थल है जिन्हें देखने के लिए यहाँ आने वाले पर्यटक को कम से कम एक सप्ताह का समय चाहिए।

1. हवा महल

हवा महल भी जयपुर का प्रसिद्ध दर्शनीय स्थल है। महाराजा सवाई प्रताप सिंह ने इस महल को 1799 में बनवाया था। हवा महल में कुल 953 खिड़कियाँ बनाई गई थी, ताकि हवा आसानी से आ – जा सके इसलिए ये महल विश्व भर में हवा महल के नाम से जाना जाता है। इस महल को 5 मंजिला ईमारत गई है और इस महल में उपर-नीचे जाने के लिए सीढ़ियां नहीं बल्कि इसमें धलानुमा रेप है जो राजशाही स्त्रियों के लिए इसका निर्माण किया गया था। इसे लाल गुलाबी पत्थरों से बनवाया गया है. यहाँ पुरातात्विक संग्रहालय भी है,

2. सिटी पैलेस

जयपुर में सिटी पैलेस प्रसिद्ध स्थान है। इसका निर्माण सवाई जय सिंह द्वितीय ने 1729 से 1732 ई. वी. के मध्य करवाया था। इस महल परिसर में देखने योग्य बहुत – सी जगह है जिनमे प्रमुख है जैसे – चन्द्र महल, प्रीतम निवास चौक, दीवान-ए-खास, दीवान-ए-आम, महारानी पैलेस, भग्गी खाना, गोविन्द देव जी मंदिर और मुबारक महल आदि है। चन्द्र महल को संग्रहालय बना दिया गया है, जहाँ पर आवश्यक सामान हथकरघा उत्पाद और अन्य सामान रखा जाता है। जो राजस्थान राज्य की सांस्कृतिक विरासत का प्रतीक है। यहाँ की वास्तुकला बहुत ही सुन्दर है जिसे देखकर सब लोग तारीफ करते है। ओर यहां से आपको जयपुर पिंक सिटी का नज़ारा बहुत ही प्यारा एवं अद्भुत लगता है।

3. जंतर मंतर वेधशाला

जंतर मंतर विश्व की सबसे बड़ी एकमात्र वेधशालाओं है। इसका निर्माण महाराजा जय सिंह द्वितीय के समय में कराया गया था। धुपघड़ी वेधशाला यहाँ खगोलीय वेधशाला दुनिया की सबसे बड़ी वेधशाला में से है। महाराजा जय सिंह द्वितीय को वास्तुकला, खगोल विज्ञान, दर्शन सहित अन्य विषयों में अभीरुचि थी। खगोल विज्ञान में महाराजा जय सिंह द्वितीय की विशेष रूचि थी और इसलिए इन्होंने देश की सबसे बड़ी वेधशाला का निर्माण शुरू करवाया। उनके पास समय को मापने वाला ज्यामितीय डीवाईस भी पाया जाता था। जिससे वे तारामंडल की स्थिती की जानकारी प्राप्त करते थे। और सबसे बड़े तारे की आसपास की स्थिति का अवलोकन किया करते थे। दुनिया भर में खगोलविदों और आर्किटेक्टर की प्ररेणा स्वरूप ही खगोलीय उपकरणों का निर्माण किया गया।

4. नाहरगढ़ किला

नाहरगढ़ का किला (Nahwrgarh fort) अरावली की पहाड़ियों में स्थित है, जहाँ से पूरा जयपुर दिखाई देता है। इसे पहले सुदर्शन गढ़ के नाम से बी जाना जाता, जानकर बताते है जब ये बन रहा था, तब यह के सर्वगिये राजा नाहर सिंह की आत्मा यहाँ अंदर निवास करती थी और इसके निर्माण कार्य को देखा करती थी, जिसके बाद इसका नाम नाहरगढ़ रख दिया गया। इसे 1734 में बनवाया गया था, फिल्म 'रंग दे बसंती' और शुद्ध देशी रोमांस, फिल्म के लिए भी सीन को यहाँ फिल्माया गया है।

5. जयगढ़ किला

जयगढ़ का किला (Jaigarh fort) नाहरगढ़ से 12 किलोमीटर दूर अरावली पहाड़ियों में, चील का टीला पर स्थित है। यहाँ से आमेर पैलेस भी 2 किलोमीटर की दूरी पर है जो साफ साफ दिखाई देता है। जयगढ़ किल को 1726 में आमेर की रक्षा की लिहाज से जय सिंह 2 के द्वारा निर्माण करवाया गया था। जिसे बाद में इनका नाम जय सिंह के नाम पे रखा गया था। इसे विजय किला के नाम से भी जाना जाता है। इसकी आकार आमेर पैलेस के जैसी है,

6. अम्बर किला

अम्बर का किला को आज आमेर किला (Amer Fort) के नाम जानते है जो अरावली की पहाड़ियों में जयपुर से 11 किलोमीटर दूर स्थित है। इसका निर्माण 1592 ईसवी में राजा मानसिंह द्वारा किया गया था। राजा जय सिंह प्रथम के सासन काल में और विशाल बनाया गया था। इस महल का निर्माण लाल बलुआ पत्थर और संगमरमर के पत्थर को मिलाकर किया गया था, जो हिंदू-मुस्लिम वास्तुकला के एक मिश्रण दर्शाता हैं। पूर्व दिशा की ओर इसका मुख्य द्वार है। इस महल के 3 अन्य द्वार भी है। इस महल में अंबर पैलेस में चार आंगन हैं, जहाँ दीवान-ए-आम भी है। इस महल में आपको हाथी पर घूमने व सवारी करने का

www.ignited.in

अवसर भी मिलेगा। हाथी की सवारी आप पूरे महल में कर सकते है।

7. जयपुर-जू

जयपुर जू को 1877 ईस्वी में बनाया गया। इसको 2 जगहों पर विभाजित किया गया है। क्योंकि इसमें एक भाग में पक्षियों को रखा गया है जो जयपुर सिटी के अंदर है और दूसरा आमेर किले के पास है दूसरे में जानवरो को रखा जाता है। यहाँ दुनिया भर में पाई जाने वाली 50 से भी ज्यादा पशु पक्षियों की प्रजाति देखने को मिलती है। यहां कम से कम जानवरो की 550 प्रजाति देखने को मिलती है। भारत के सबसे बड़े चौथे घड़ियाल प्रजनन की स्थापना वर्ष 1999 में की गई थी।

8. रामगढ़ लेक

रामगढ़ लेक को मानव निर्मित लेक माना जाता है। यह जयपुर से 32 किलोमीटर दूर स्थित है। एशियन गेम्स का नौकायन इवेंट 1982 में इसी लेक में हुआ था। बरसात के समय ये लेक पूरी तरह पानी से लबालब भर जाता है। जिससे यह जयपुर के लोगों के लिए सबसे अच्छा पिकनिक स्पॉट साबित होता है।

9. हाथी सफारी

हाथी की सवारी के शौकीन पर्यटक को यहां हाथी कि सवारी करने का मौका भी आसानी से मिल जाता है क्योंकि आमेर किला के पीछे की अरावली चोटी पर यह हाथी की सफारी होती है। हाथी की सवारी का लोग खूब लुप्त उठाते है। ये सभी को बहुत अच्छा लगता है। ये सवारी खेतो और किलो के मध्य से होकर अरावली के जंगलों के बीच में शिविर तक ले जाते है। यहाँ से हम जंगल की ख़ूबसूरती का नज़ारा आसानी से देख सकते है। रात के समय में की गई ये सवारी बहुत ही आनन्दायक होती है।

10. मिर्जा इस्माइल रोड - एम.आई.रोड, जयपुर

जयपुर शहर का सबसे व्यस्त बाजार और सबसे व्यस्त रोड एम.आई.रोड का पूरा नाम मिर्जा इस्माइल रोड है। जयपुर शहर की इस सबसे व्यस्त रोड पर लगभग सभी बड़े ब्रांड के शो रूम बने हुए है। एम.आई.रोड की वास्तुकला इतनी सुंदर है की इसके एक छोर से दूसरे छोर तक आप कब पहुँच जाते है ये आप को पता ही नहीं चलता।

24 अक्टूबर 1883 को जन्मे मिर्जा इस्माइल इस खूबसूरत बाजार का निर्माण मैसूर शहर की तर्ज पर करवाया था। 1942 में महाराजा सवाई मानसिंह ने मैसूर के दीवान मिर्जा इस्माइल को जयपुर के दक्षिणी भाग को विकसित करने की जिम्मेदारी सौंपी और जयपुर शहर का दीवान भी घोषित किया।

सवाई महाराजा मानसिंह ने मिर्जा इस्माइल को सिर्फ एक वर्ष के लिए ही जयपुर का दीवान घोषित किया था लेकिन मिर्जा इस्माइल जिस प्रकार जयपुर के दक्षिणी भाग को विकसित कर रहे थे उससे प्रसन्न हो कर महाराजा सवाई मानसिंह ने मिर्जा इस्माइल के कार्यकाल को दो वर्ष तक बढ़ा दिया। मिर्जा इस्माइल इस बाजार का नाम सवाई मानसिंह रोड रखना चाहते थे लेकिन महाराजा सवाई मानसिंह ने मिर्जा इस्माइल का सम्मान में इस रोड का नाम मिर्जा इस्माइल रखा।

11. राजमंदिर सिनेमाहॉल जयपुर

मल्टीप्लेक्स सिनेमा हॉल के समय में एक सिंगल स्क्रीन सिनेमाहॉल के बारे में सोचना भी बड़ा अजीब लगता है। जयपुर में 1 जून 1976 को निर्मित राजमंदिर सिनेमाहॉल आज भी ऐसी सभी बातों का मजाक उड़ता हुआ प्रतीत होता है। एमआई रोड़ के पास स्थित राजमंदिर सिनेमाहॉल में आज भी किसी मल्टीप्लेक्स सिनेमाहॉल से ज्यादा दर्शक फ़िल्म देखने आते है।

शायद दर्शकों से ज्यादा पर्यटक राजमंदिर सिनेमा हॉल देखने आते है। एक सिनेमाहॉल का एक प्रसिद्ध पर्यटक स्थल के रूप पहचान रखना थोड़ा अजीब लगता है। राजमंदिर सिनेमा हॉल के एक पर्यटक स्थल के रूप में प्रसिद्ध होने के पीछे सबसे बड़ा कारण है इस सिनेमा हॉल की वास्तु शैली और दूसरा मुख्य कारण है इस सिनेमा हॉल में दर्शकों के बैठने की क्षमता।

गुलाबी रंग से रंगी हुई राजमंदिर सिनेमाहॉल की वास्तु कला अंदर और बाहर से इतनी खूबसूरत है की इस सिनेमा हॉल को "प्राइड ऑफ एशिया" की उपाधि भी प्रदान की गई है। अंदर से देखने पर यह सिनेमा हॉल किसी महल से कम नहीं लगता है।

राजमंदिर सिनेमाहॉल के अंदर लगे हुए बड़े-बड़े झूमर और स्क्रीन के पास लगा मखमल का पर्दा इसकी ख़ूबसूरती को और बढ़ा देते है। ऐसा माना जाता है की राजमंदिर सिनेमाहॉल एशिया का

सबसे बड़ा सिनेमाहॉल है एक बार में इस सिनेमाहॉल में 1300 दर्शक फ़िल्म देख सकते है।

1966 में तत्कालीन मुख्यमंत्री मोहनलाल सुखाड़िया द्वारा राजमंदिर सिनेमाहॉल के निर्माण की नीवं रखी गई और लगभग एक दशक के बाद 1 जून 1976 तत्कालीन मुख्यमंत्री हरिदेव जोशी ने इस भव्य सिनेमाहॉल का उद्घाटन किया। राजमंदिर सिनेमाहॉल की डिज़ाइन उस समय के प्रसिद्ध वास्तुकार श्री डब्ल्यू एम नामजोशी द्वारा बनाई गई है।

12. अमर जवान ज्योति वॉर मेमोरियल, जयपुर

16 अगस्त 2005 को तत्कालीन राजस्थान के मुख्यमंत्री ने कारगिल युद्ध और इसके अलावा भारत- पाकिस्तान और भारत-चीन युद्ध के समय वीरगति को प्राप्त हुए राजस्थान के बहादुर सैनिकों के सम्मान में जयपुर में सवाई मानसिंह स्टेडियम के सामने अमर जवान ज्योति वॉर मेमोरियल का उद्घाटन किया।

इस वॉर मेमोरियल के निर्माण में कुल 165 दिन का समय लगा अपने निर्माण के बाद से ही यह वॉर मेमोरियल स्थानीय लोगों और पर्यटकों के लिए समय व्यतीत करने का सबसे पसंदीदा स्थान बन गया। अमर जवान ज्योति पर राजस्थान के गौरवशाली इतिहास और भारत-पाकिस्तान के बीच हुए युद्ध के समय राजस्थान के वीर सैनिकों द्वारा दिखाए गए अदम्य साहस और शौर्य को झांकियों के द्वारा प्रदर्शित किया गया है।

अमर जवान ज्योति में इन झांकियों के अलावा रात राजस्थान के इतिहास और वीर सैनिकों की शौर्य गाथाओं को लाइट एंड साउंड शो के द्वारा बताया जाता है जिसे स्थानीय निवासियों और पर्यटकों द्वारा सबसे ज्यादा पसंद किया जाता है। आधे घंटे चलने वाले इस लाइट एंड साउंड शो को सुनने वाला जब इसे अनुभव करता है तो उसके रौंगटे खड़े हो जाते है।

अमर जवान ज्योति पर लाइट एंड साउंड शो का आयोजन प्रतिदिन शाम को 7:00 बजे से लेकर रात्रि 9:00 बजे तक किया जाता है। लाइट एंड साउंड शो की अवधि आधे घंटे की होती है और शो के लिए किसी भी प्रकार का प्रवेश शुल्क नहीं लिया जाता है। अमर जवान ज्योति को देखने के लिए दिन के समय कभी भी जाया जा सकता है लेकीन शाम के समय इस वॉर मेमोरियल पर युवाओं की भीड़ दिखाई देती है।

13. जवाहर कला केंद्र जयपुर

अपनी सांस्कृतिक विरासत, कला और शिल्प को संजो कर रखने के लिये जयपुर पूरे विश्व में प्रसिद्ध है। 8 अप्रैल 1993 में रविन्द्र रंगमंच जैसे थिएटर के अलावा एक और कला और संस्कृति को समर्पित थिएटर जवाहर कला केंद्र का उद्घाटन राजस्थान सरकार करती है। जवाहर कला केंद्र की इमारत का डिज़ाइन 1986 में वास्तुकार चाल्स कोरिया ने तैयार किया, और 1991 में जवाहर कला केंद्र की इमारत बन कर तैयार हो जाती है।

राजस्थान सरकार ने जवाहर कला केंद्र का निर्माण कला और शिल्प को सरंक्षण देने के लिए करवाया था। जवाहर कला केंद्र के डिज़ाइन बनाते समय वास्तुकार चाल्स कोरिया ने जयपुर की स्थानीय नगर शैली, और जयपुर में निर्मित भवनों की शैली को ध्यान में रखकर इसका डिज़ाइन तैयार किया। जवाहर कला केंद्र की इमारत को कई ब्लॉक में विभाजित किया गया है।

जवाहर कला केंद्र की इमारत में आवास, संग्रहालय, रंगमंच, कॉन्फ्रेंस हॉल, आर्टगैलेरी, उद्यान, लाइब्रेरी, शिल्पग्राम, कैफेटेरिया और ओपन थिएटर बने हुए है। इस जगह पूरे वर्ष अनेक राष्ट्रीय और अंतराष्ट्रीय स्तर के सांस्कृतिक, कला और शिल्प को समर्पित कार्यक्रमों को आयोजन किया जाता है।

समय-समय रंगमंच के बड़े कलाकारों द्वारा जवाहर कला केंद्र में नाटकों का आयोजन भी किया जाता है यहाँ होने वाले सभी कार्यक्रमों में स्थानीय और विदेशी कलाकार हिस्सा लेते रहते है। जवाहर कला केंद्र के कैफेटेरिया में हर समय देशी और विदेशी कलाकारों का जमावड़ा रहता है। पर्यटकों के लिए जवाहर कला केंद्र सुबह 10:00 बजे से लेकर शाम को 5:00 बजे तक खुला रहता है। जवाहर कला केंद्र में किसी भी प्रकार का प्रवेश शुल्क नहीं लिया जाता है।

www.ignited.in

14. स्मृति वन जयपुर

जयपुर में जेएलन मार्ग के समीप स्थित स्मृति वन जयपुर का सबसे अधिक जैव विविधता वाला वन क्षेत्र है। 1981 में आई बाढ़ के समय इस स्थान पर एक गहरा गड्ढा बन गया। उसके कुछ समय बाद स्थानीय निवासी इस स्थान पर अपने प्रियजनों की स्मृति में वृक्षारोपण करने लग गए और इस वजह से इस स्थान की जैविक विविधता बढ़ गई और इस वन क्षेत्र का नाम भी स्मृति वन पड़ गया।

कुछ समय के उपरांत राजस्थान सरकार ने इस वन क्षेत्र को ग्रीन राजस्थान योजना के अन्तर्गत वृक्षारोपण द्वारा विकसित करना शुरू किया और इस स्थान का नाम स्मृति वन रखा। स्मृति वन का निर्माण कार्य 8 अक्टूबर 2005 को राजस्थान द्वारा शुरू किया गया और 8 दिसंबर 2007 को स्थानीय जनता और पर्यटकों के लिए खोल दिया गया। स्मृति वन में सुबह के समय स्थानीय लोग मॉर्निंग वॉक के लिए आते है।

स्मृति वन में पर्यटकों और स्थानीय निवासियों के घूमने के लिए ट्रेक बनाये गए है। स्मृति वन कुल 40 एकड़ में फैला हुआ है। पूरे स्मृति वन को 11 खंडों में बांटा गया है और इन सभी खंडों का पेड़-पौधों के विशेषता के अनुरूप नामकरण किया गया है।

स्मृति वन के 11 खंडों के नाम इस प्रकार है- वसुंधरा वन, चम्पा वन, अरावली वन, धन्वंतरि वन, जावा कुसुम वन, मरु वन, राष्ट्रीय वन, नर्सरी, सरोवर, संग्रहालय और वृंदावन वन इन सभी खंडों में अलग-अलग विविधता वाले वृक्ष, औषधीय गुण वाले पौधे और खुशबूदार पौधे उगाए गए है जैसे- मोगरा, कोरल, चंपा, अल्मोड़ा, बोगनविलिया, खेजड़ी, गूगल, सलार, जेरोफाइट्स और यूफोरबिया जैसे पेड़ पौधे उगे हुए है।

स्मृति वन सुबह 6:00 बजे से शाम को 5:00 बजे तक पर्यटकों के लिए खुला रहता है और स्मृति वन में प्रवेश पूरी तरह से निःशुल्क है।

15. झालाना लेपर्ड रिज़र्व जयपुर

समय के साथ जैसे-जैसे जयपुर की आबादी बढ़ती गई और इस शहर की सीमा का विस्तार होने लगा तो जयपुर के आसपास के जंगल की सीमाएं घटती गई। जंगल की सीमाएं घटने से इंसान और जानवरों के बीच टकराव बढ़ने लगा जो की उस समय की राजस्थान सरकार के लिए चिंता का बड़ा विषय बन गया।

जयपुर के आसपास के वन क्षेत्र तेंदुए जैसे वन्यजीव की संख्या हमेशा से ही अन्य वन्यजीवों से अधिक रही है। लेकिन इंसानो और तेंदुओं के बीच बढ़ते टकराव के कारण इस प्राणी की संख्या बहुत तेजी से गिरने लग गई। 1973 में राजस्थान सरकार ने इंसानो और वंयजीवों के बीच टकराव कम करने के लिए और तेंदुए जैसे शानदार प्राणी को सरंक्षण देने के लिए "प्रोजेक्ट लेपर्ड" की स्थापना।

राजस्थान सरकार ने सबसे पहले प्रोजेक्ट लेपर्ड के अंतर्गत जयपुर के झालाना क्षेत्र को तेंदुओं और अन्य वन्यजीवों के लिए 22 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र को सरंक्षित क्षेत्र घोषित किया। झालाना लेपर्ड रिज़र्व के अलावा राजस्थान सरकार ने इस वन्यजीव को सरंक्षण देने सात अन्य स्थानों को भी चिन्हित किया है- माउंट आबू, कुंभलगढ़, शेरगढ़, खेतड़ी, जवाईबांध, जयसमंद और बस्सी। झालाना लेपर्ड रिज़र्व की सम्पूर्ण जानकारी के लिए यहां क्लिक करें।

16. पिंक पर्ल वाटर एंड एम्यूजमेंट पार्क जयपुर

जयपुर में अजमेर रोड पर स्थित पिंक पर्ल वाटर एंड एम्यूजमेंट पार्क राजस्थान का सबसे बड़ा वाटर एंड एम्यूजमेंट पार्क है। सप्ताहांत के समय बड़ी संख्या में स्थानीय जयपुर निवासी और आसपास के क्षेत्र के लोग अपने मित्रों और परिवार के साथ जयपुर में स्थित पिंक पर्ल वाटर एंड एम्यूजमेंट पार्क में समय बिताते हुए मिल जाएंगे।

इस वाटर एंड एम्यूजमेंट पार्क में स्विमिंग पूल, वाटर राइड्स, वाटर स्लाइड्स, रेस्टोरेंट और रेन डांस के अलावा बहुत सारी एडवेंचर एक्टिविटी भी कर सकते है। पिंक पर्ल वाटर एंड एम्यूजमेंट पार्क पूरे सप्ताह खुला रहता है सप्ताहांत के दिनों में इस वाटर एंड एम्यूजमेंट पार्क में बहुत ज्यादा भीड़ रहती है।

पिंक पर्ल वाटर एंड एम्यूजमेंट पार्क पूरे सप्ताह सुबह 10:00 बजे से लेकर शाम को 7:30 बजे तक खुला रहता है। इस वाटर एंड एम्यूजमेंट पार्क में 3.5 फ़ीट से लेकर 4.5 फ़ीट लंबे व्यक्ति के लिए प्रवेश शुल्क 300 रुपये लिया जाता है और 4.5 फ़ीट से लंबे व्यक्ति के लिये 400 रुपये प्रवेश शुल्क निर्धारित किया गया।

पिंक पर्ल वाटर एंड एम्यूजमेंट पार्क में होने वाली एक्टिविटी के अलग से शुल्क लिया जाता है। प्रवेश शुल्क में बदलाव संभव है।

17. सुजान राजमहल पैलेस जयपुर

सुजान राजमहल पैलेस जयपुर राजघराने का लगभग 250 वर्ष पुरानी ऐतिहासिक विरासत है। एक ऐतिहासिक विरासत होने के साथ-2 यह पैलेस दुनिया के सबसे महँगे होटल में भी शामिल है। इस बात अंदाजा सिर्फ इस बात से लगाया जा सकता है की इस राजशाही होटल में रुकने के लिए लोग एक रात ले लाखों रुपये खर्च कर देते है।

दुनिया भर के अमीर लोग इस होटल में अपनी शादी करवाने के लिए करोडों रुपए खर्च कर देते है। इन सब बातों के अलावा सुजान राजमहल पैलेस होटल जयपुर राजघराने की एक अमूल्य विरासत भी है। लगभग 250 साल पुराने राजमहल पैलेस में जयपुर राजघराने के सदस्य अपने आराम के क्षण व्यतीत करना पसंद करते थे।

भारत में जब अंग्रेजों ने राज करना शुरू किया तो उस समय सुजान राजमहल पैलेस का उपयोग बड़े अंग्रेज अधिकारी अपने निजी आवास के लिए करने लगे। 1947 में भारत की स्वंतंत्रता के उपरान्त ये शानदार पैलेस वापस जयपुर राजघराने के पास आ गया और कुछ वर्षों के उपरान्त सुजान राजमहल पैलेस को 5 स्टार होटल में बदल दिया गया।

18. हरिमहल पैलेस जयपुर

जयपुर के सभी राजाओं ने समय-समय पर जयपुर के आसपास के क्षेत्रों में अपने आराम करने और निजी समय व्यतीत करने के लिए बहुत सारी इमारतों का निर्माण करवाया। भारत की स्वंतंत्रता के बाद इन इमारतों का उपयोग बहुत कम हो गया इसलिए समय के साथ-साथ इन सभी ऐतिहासिक भवनों को हेरीटेज होटल में बदल दिया गया।

जयपुर के सिविल लाइन क्षेत्र में एक ऐसी ही हेरिटेज होटल है जिसका नाम है हरिमहल पैलेस। इस शानदार ऐतिहासिक भवन का निर्माण 1930 में जयपुर के महाराजा पृथ्वी सिंह ने अपने आरामगाह तौर पर करवाया था। आज यह ऐतिहासिक भवन एक हेरीटेज होटल के रूप में बहुत प्रसिद्ध है और एक निजी फर्म पचार ग्रुप द्वारा इस हेरिटेज होटल का संचालन किया जाता है।

19. सामोद हवेली, जयपुर

जयपुर से लगभग 40 किलोमीटर दूर सामोद एक समय आमेर रियासत का हिस्सा हुआ करता था। 16वीं शताब्दी में सामोद के जमींदारों ने इस जगह एक राजपुर किले का निर्माण करवाया था। 19वीं शताब्दी में इस किले को एक महल के रूप में परिवर्तित कर दिया गया। इस किले के नवीनीकरण के समय इसकी स्थापत्य शैली राजपूत और मुगल स्थापत्य शैली का उपयोग किया गया।

175 वर्ष पुराने इस शानदार महल को 1987 में एक हेरीटेज होटल में बदल दिया गया। राजपुत स्थापत्य शैली और मुगल स्थापत्य शैली से निर्मित सामोद हवेली एक होटल होने के साथ साथ राजस्थान की एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक धरोहर भी है। इस शानदार महल में बने हुए भित्ति चित्रों का आज भी संजो कर रखा गया है।

20. डिग्गी पैलेस जयपुर

जयपुर से 40 किलोमीटर दूरी पर स्थित डिग्गी पैलेस का निर्माण खंगारोत राजपूत शासक श्री ठाकुर साहब प्रताप सिंह जी डिग्गी ने 1860 में करवाया। 1980 तक प्रताप सिंह जी वंशजों ने डिग्गी पैलेस के भवन निर्माण में अपना-अपना योगदान दिया।

1991 में डिग्गी पैलेस के एक हिस्से को ठाकुर राम प्रताप सिंह डिग्गी और उनकी पत्नी ज्योतिका कुमारी डिग्गी ने हेरीटेज होटल में बदल दिया और एक हिस्से का उपयोग अपने निजी निवासी स्थान के रूप में करने लगे।

डिग्गी पैलेस हेरिटेज होटल का संचालन आज भी डिग्गी राजपरिवार द्वारा ही किया जाता है। एक हेरिटेज होटल के रूप में डिग्गी पैलेस पूरी दुनिया में अपनी एक अलग पहचान रखता है।

जयपुर के आसपास घूमने की जगह

रणथम्भौर दुर्ग, रणथम्भौर नेशनल पार्क, रणथम्भौर नेशनल पार्क टाइगर सफारी, पुष्कर, जयपुर भाग-01, जयपुर भाग-02, हाथी गांव, गोविंददेवजी मंदिर, आमेर किला, कोटा, केवलादेव घना पक्षी विहार, सरिस्का टाइगर रिज़र्व, झालाना लेपर्ड रिज़र्व, भानगढ़ किला इसके अलावा उत्तर प्रदेश भी एक नजदीकी राज्य है यहां पर मथुरा, वृन्दावन और आगरा भी घूमने जा सकते है द्य

निष्कर्षः

यह अध्ययन इस निष्कर्ष पर पहुंचाता है कि पिंक सिटी जयपुर टूरिस्ट के मामले में सबसे अच्छा स्थान है। जयपुर के विशाल आकर्षण और प्राकृतिक आवास अद्भुत हैं। जयपुर की संस्कृति, वास्तुकला, परंपरा, कला, आभूषण और वस्त्र हमेशा यात्रियों द्वारा पोषित होते हैं। जयपुर शहर एक ऐसा शहर है जिसे आधुनिकीकरण के बाद भी अपनी प्राचीन सभ्यता और गौरवशाली अतीत के लिए माना जाता है। आज इस गुलाबी शहर को देखने के लिए दुनिया भर से हजारों पर्यटक आते हैं। राज्य सरकार ने सितंबर में पर्यटन नीति को लागू करके राजस्थान में पर्यटन विकास का रास्ता खोल दिया है, इससे निश्चित रूप से पिंक सिटी जयपुर को भी लाभ होगा।

संदर्भ पुस्तक सूचीः

1. ब्रूटन, टी. एल. (1970). “एंटरटेनमेंट, रिसर्च एंड प्लानिंग”, एलन एंड अनविन, लंदन।

www.ignited.in

2. ब्रायडेन, जॉन, एम. (1973). “पर्यटन और विकास”, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, कैम्ब्रिज।

3. बर्कार्ट और मेडलिक (1981) “पर्यटनः अतीत, वर्तमान और भविष्य”, विलियम हैनीमैन, लंदन।

4. चिब, एस.एन., “पर्यटन नीति-एक राजनीतिक अपराध”, पूर्वी अर्थशास्त्री, वॉल्यूम। 75, सितंबर 1980।

5. चोपड़ा सुहिता (1991). “भारत में पर्यटन और विकास”, आशीष पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली,।

6. क्रिस्टोफर, जे. कोल्लोय (1983). “द बिजनेस ऑफ टूरिज्म”, मैक डोनाल्ड, इवांस इंग्लैंड।

7. क्रैम्पटन, एल.टी. (1963). “एन एनालिसिस ऑफ़ टूरिस्ट मार्केट्स”, यूनिवर्सिटी ऑफ़ कोलोराडो प्रेस, कोलोराडो।

8. रवींद्र कुमार दुलार (2004). राजस्थान और धार्मिक पर्यटन केंद्र, पेमाराम (सं।) राजस्थान में धर्म और आस्था, नवजीवन प्रकाशन, टोंक।

9. सिंह, जगदीश, पर्यटन व्यवसाय और विकास, तेज प्रकाशन, नई दिल्ली।

10. तिवारी शिव कुमार (1999) पर्यटन विकास और पर्यावरण।

11. पीटर्स डगलस (1981), पर्यटक विकास।

12. पीटर्स, एम. (1969), हचिंसन अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन।

13. रावत, ताज (2002), पर्यटन विकास के विविध आयाम, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली।

14. जोशी, अतुल, कुमार, अमित और जोशी, महिमा (2010), भारत में आधुनिक पर्यटन, रावत प्रकाशन, जयपुर।

15. राजस्थान का भूगोल, प्रोफेसर एच एस शर्मा, पंचशील प्रकाशन, जयपुर।

16. जिला जयपुर, 2011, आर्थिक और सांख्यिकी विभाग।

17. राजस्थान पर्यटन विभाग, जयपुर।

Corresponding Author

Dr. Ramprakash Gurjar*

Head, Department of Geography, L.B.S. Govt. College Kotputli, Jaipur, Rajasthan